इकाई 3 प्रतिक्रांति-I: फासीवाद से अनुदार तानाशाही तक

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 फासीवाद के सामान्य लक्षण

3.3 फासीवाद के राजनैतिक पूर्ववर्ती

3.4 इटली में फासीवादी राज्य की आधारभूमि

- 3.4.1 फासीवादी आन्दोलन का उदय और सत्ता पर नियंत्रण
- 3.4.2 शासन व्यवस्था का सुदृढ़ीकरण
- 3.4.3 फासीवादी जन-संगठनों के प्रमुख प्रकार
- 3.4.4 फासीवादी राज्य की प्रकृति
- 3.4.5 पतन और सैलो गणतंत्र

3.5 स्पेन में दक्षिणपंथी तानाशाही और आंदोलन

3.6 फ्रांसीसी दक्षिणपंथी और वीशी सरकार

3.7 दक्षिणपंथी आंदोलन और तानशाही : पूर्वी मध्य यूरोप और बाल्टिक राज्य

- 3.7.1 पोलैंड
- 3.7.2 हंगरी
- 3.7.3 चेकोस्लोवाक
- 3.7.4 बाल्टिक राज्य

3.8 सारांश

3.9 शब्दावली

3.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

इस इकाई का मुख्य उद्देश्य यूरोप में दो विश्व युद्धों के बीच अति दक्षिणपंथी आंदोलनों और शासन व्यवस्थाओं के विकास की चर्चा करना है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- फांसीवाद के कुछ सामान्य लक्षण और इसके संगठन की प्रवृत्ति को जान सकेंगे;
- यूरोप में विभिन्न देशों में फासीवाद के वैचारिक स्वरूपों और संगठनात्मक शैली का परिचय प्राप्त कर सकेंगे;
- इटली और स्पेन जैसे देशों में फासीवादी शासन व्यवस्था की प्रकृति को पहचान सकेंगे; और
- समूचे यूरोप में अर्ध-फासीवादी शासन व्यवस्थाओं और संगठनों के फैलाव का विवेचन कर सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में चुनावों, दलों और प्रतिनिधित्व के ज़रिए लोगों को लामबंद करने की राजनीति को संस्थागत रूप देने का काम शुरू हो चुका था। इसके कारण वामपंथी से लेकर दक्षिणपंथी तक के कई विकल्प सामने आए। दबा हुआ सामाजिक मतभेद भी उभर कर सामने आ गया। 1870 के बाद एकाधिकार पूंजीवाद के विकास और इसके परिणामस्वरूप साम्राज्यवादी प्रतिद्वंद्विता से उपजी अतिराष्ट्रवादी विचारधाराओं और सैन्यवाद को प्रथम विश्वयुद्ध के बाद यूरोप में दक्षिणपंथी फासीवादी तानाशाही के उदय की पृष्ठभूमि के रूप में देखा जा सकता है। इस नए संदर्भ में कार्य स्थल के बाहर बनी नए और गैर वर्गीय पहचानों को राजनैतिक समर्थन का आधार बनाया गया। इसके परिणामस्वरूप 'युद्ध अनुभवी सैनिक', 'करदाता', 'खेलप्रेमी' या 'राष्ट्रीय नागरिक' जैसी अनेक जन-निवार्चन क्षेत्र निर्मित की गईं। आपने युद्धोत्तर काल में यूरोप में जन्मी तीन विचारधाराओं और उनके वामपंथी, दक्षिणपंथी और मध्यमार्गी शासन व्यवस्थाओं का परिचय प्राप्त किया है। इकाई 1 में आपको 'मध्यमार्ग' अर्थात 1920 के दशक में ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी के उदारवादी जनतांत्रिक शासन व्यवस्थाओं की जानकारी दी गई। इस इकाई में दक्षिणपंथी अर्थात इटली, जर्मनी (1930 और 1940 के दशक के आरंभ में हिटलर के नेतृत्व में) और स्पेन जैसे देशों के फासीवादी आंदोलनों और शासन व्यवस्थाओं पर विचार किया जा रहा है। इस इकाई में सबसे पहले फासीवाद के सामान्य लक्षणों की चर्चा की गई है। इसके बाद इसमें जर्मनी के अलावा अन्य देशों के संदर्भ में फासीवाद की चर्चा की गई है। जर्मनी पर अगली इकाई में अलग से चर्चा की जाएगी।

3.2 फासीवाद के सामान्य लक्षण

फासीवाद की व्याख्या कई प्रकार से की जाती है। इसकी कुछ महत्त्वपूर्ण व्याख्याएं इस प्रकार हैं:

- मार्क्सवादी विचारधारा के अनुसार वित्तीय पूंजीवाद का एक हिंसक, तानाशाही एजेंट;
- मध्यम-वर्गीय उग्र सुधारवाद की एक अनूठी अभिव्यक्ति;
- सांस्कृतिक और नैतिक गिरावट का प्रतिफलन;
- एक प्रकार के मानसिक असंतुलन और विकृति का परिणाम;
- नातेदारी, चर्च, श्रेणी और निवास स्थान आदि परम्परागत पहचानों के टूटने पर आकार रहित जनसमूह के उदय का प्रतिफलन; और
- बोनापार्टवाद का एक रूप या किसी खास वर्ग के प्रभुत्व से स्वतंत्र स्वायत्त सत्तावादी या अधिनायकवादी सरकार।

इस सूची में और भी कई बातें जोड़ी जा सकती हैं परंतु इन अलग-अलग व्याख्याओं से यह पता चल जाता है कि फासीवाद के विषम तत्व होते हैं। यूरोप में फासीवाद का उदय समग्र राष्ट्रवाद (अन्य सभी प्रकार के मानवीय पहचानों को पीछे छोड़ते हुए राष्ट्र की सौहार्द्रपूर्ण सामूहिकता में विश्वास) और गैर मार्क्सवादी समाजवाद के मिलन से हुआ। इस समग्र राष्ट्रवाद में साम्यवाद, संसद, लीग ऑफ नेशन्स, वित्तीय पूंजी और बहुराष्ट्रीय यहूदी समुदाय जैसे अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों और आंदोलनों तथा अन्तर्राष्ट्रवाद के प्रति गहरा वैमनस्य भाव था। फासीवाद का उदय एक ऐसे उग्र सुधारवादी आंदोलन के रूप में हुआ जिसमें उदारवाद, प्रजातंत्र और मार्क्सवाद जैसी अवधारणाओं को अस्वीकार किया गया।

फासीवादी विचारधारा, बौद्धिक जागरण से विरासत में प्राप्त राजनैतिक संस्कृति और इसकी विचारधाराओं जैसे तर्कसंगत भौतिकवाद, व्यक्तिवाद और बहुलतावादी स्वायत्तता जैसे सिद्धांतों की अस्वीकृति का प्रतीक बन गई। फासीवाद के अन्य सांस्कृतिक चेहरे साक्रियतावाद, जैवशक्तिवाद और सामाजिक-डार्विनवाद के रूप में उभर कर आते हैं। सोरेल का कार्य-दर्शन अन्तर्ज्ञान, ऊर्जा और जीवन शक्ति पर आधारित था। इसके सक्रियतावाद का उपयोग जनसमुदाय को लामबंद करने के लिए किया जाता था। सामाजिक डार्विनवाद का मानना था कि समाज में लोग जीने के लिए आपस में संघर्ष करते हैं और इसमें श्रेष्ठ समूहों और नस्लों की जीत होती है।

फासीवाद का मूल उन्नीसवीं शताब्दी में उदारवादी प्रजातंत्र, संसदीय प्रणाली और मार्क्सवादी समाजवाद की आलोचनाओं में ढूंढा जा सकता है। हालांकि इनके विचार रूढ़िवादी अधिनायकतावादी समूहों से अलग थे। सामान्य तौर पर धार्मिक विचारधारा रूढ़िवादी अधिनायकतावाद का आधार थी जबकि फासीवाद जैवशक्तिवाद, गैर तर्कसंगतता या धर्मनिरपेक्ष नव-आदर्शवाद जैसे नए सांस्कृतिक दर्शनों पर आधारित था। रूढ़िवादियों ने जहां परम्परागत विरासत का सहारा लिया वहीं फासीवादियों ने उग्र सुधारवादी संस्थागत परिवर्तन का आह्वान किया।

युद्ध से पैदा हुई सामाजिक और मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों से फासीवाद को ठोस रूप ग्रहण करने में मदद मिली। इसने जनता और आर्थिक संसाधनों को लामबंद करके जुटाने में राष्ट्रवाद की क्षमता को उजागर किया। इसने आधुनिक राज्य में आदेश की एकता, प्राधिकार, नैतिक लामबंदी और राज्य के लिए प्रचार के महत्त्व को प्रदर्शित किया। युद्ध के बाद, फासीवाद एक समान और एक सूत्र में बंधे लोगों के नजरिये के रूप में उदित हुआ, जिन्हें सामुदायिक उपासना गीतों और मशाल जुलूसों के ज़रिए एकजुट किया गया और इसमें सम्प्रदाय विशेष की शारीरिक शक्ति, हिंसा और क्रूरता को उजागर किया गया। ड्यूस (इटली) और फ्यूहरर (जर्मनी) के रूप में नेता को कमोबेश एक धार्मिक और पवित्र व्यक्तित्व मानने की यह आदर्श अभिव्यक्ति थी। जनतांत्रिक-बुर्जूवा संस्थाओं और मूल्यों का विरोध करने के बावजूद फासीवादियों ने जन-लामबंदी, जनमत और उनके द्वारा अपनाए गए राजनीति के तरीकों का इस्तेमाल किया; परंतु वे समाज में बहुलतावाद के सम्मान, व्यक्ति की स्वतंत्रता और नागरिक तथा राजनैतिक स्वतंत्रताओं पर आधारित प्रजातंत्र का विरोध करते थे। उन्होंने राजनीति का सैन्यीकरण कर और सैन्य प्रतीकों और शब्दावली का इस्तेमाल कर जनता को अपनी ओर आकृष्ट किया। राष्ट्रवाद की भावना उभारने और लगातार संघर्ष करने के साथ-साथ विरोधियों का सफाया करने के लिए पार्टी के अर्ध-सैनिक दस्तों का अक्सर उपयोग किया जाता था। अपने समर्थकों के साथ राजनैतिक संबंधों के सैन्यीकरण के क्रम में खासतौर पर पौरुष शक्ति को महत्व दिया गया और इसे समाज के एक समग्र दृष्टिकोण के रूप में प्रस्तुत किया गया। समग्र समाज संबंधी उनके इस दृष्टिकोण के अनुसार समाज के विभिन्न अंगों के आपसी संरचनात्मक संबंध केवल उनकी भूमिकाओं को परिभाषित और असीमित करते हैं और इसमें व्यक्तिगत पहचान और अधिकारों की भूमिका नगण्य होती है। युवाओं का उत्तेजक आह्वान और अधिनायकतावाद, करिश्मा, नेतृत्व की व्यक्तिगत शैली (ऐच्छिक या अनैच्छिक) की खास प्रवृत्ति राजनीति के सैन्यकरण से जुड़े कुछ अन्य महत्वपूर्ण लक्षण थे।

एक प्रकार का नियमित, बहु-वर्गीय, समन्वित राष्ट्रीय आर्थिक ढांचा (जिसे राष्ट्रीय संघ, राष्ट्रीय समाजवादी या राष्ट्रीय सिंडिकेलिस्ट के विविध नामों से जाना जाता था) भी फासीवादी दर्शन का एक अन्य महत्त्वपूर्ण लक्षण था। साम्राज्य का लक्ष्य या कम से कम अन्य ताकतों के साथ राष्ट्र के संबंधों में मूलभूत बदलाव भी एक निर्णायक कारक था।

3.3 फासीवाद के राजनैतिक पूर्ववर्ती

भ्रूण रूप में फासीवादी विचारों का विकास उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त और बीसवीं शताब्दी की शुरूआत में देखा जा सकता है। नये केन्द्रीयकृत राज्यों के उदय, व्यक्तिवाद और सामाजिक परमाणुकरण की प्रतिक्रिया के रूप में कोरपोरेटवाद (वर्ग टकराव से मुक्त उत्पादकों और लोगों का एक समुदाय) के विचार उभरे। प्रारंभ में यह व्यक्तिगत सम्बन्धों की एक रहस्यमय समुदाय की सामंती विचारधारा का अवशेष था। लेकिन धीरे-धीरे इसने आधुनिक सुधारवादी और वर्ग सहयोगी रूपों को धारण कर लिया। इसके दो विशिष्ट रूप थे - सोशल कोरपोरेटवाद (निगमों की स्वायत्ता पर आधारित) और राजकीय कोरपोरेटवाद। दूसरे स्तर पर, हम रूढ़िवाद से नवसत्तावाद की तरफ एक प्रवृत्ति देख सकते हैं। एक्शन फांसेस (1899 में फ्रांस में स्थापित) इस नये सत्तावादी, नव राजतन्त्रवादी राष्ट्रवाद का प्रतिनिधि था। इसका मुख्य सिद्धांत वैध और निगमों पर आधारित प्रतिनिधित्व था। इसने यहूदी विरोधवाद और भ्रूण रूप में युवा कार्यकर्त्ताओं के एक जुझारू समूह (फासीवाद अर्धसैनिक दस्ते के अग्रदूत के रूप में) का इस्तेमाल किया।

फासीवादी दक्षिणपंथ के निर्माण का तीसरा रूझान घरेलू आधुनिकीकरण और उग्र राष्ट्रवाद को जोड़ने वाले सहायक उग्र दक्षिणपंथ के रूप में सामने आया। इसकी राजनीतिक अभिव्यक्ति इटालिएन नेशनल ऐसोसिएशन (ए.एन.आई. 1910 में स्थापित) थी। इसकी राजकीय कोरपोरेटवाद की विचारधारा ने इटली को एक मजबूत शाही देश बनाने के लिए आधुनिक औद्योगिक उत्पादन के समन्वय कोशिश की थी और इसके अर्ध-सैनिक दस्ते सेम्परप्रोन्ती (आलवेज् रेड़ी) ने वामपंथी हिंसा का अपने स्वयं की सड़क हिंसा द्वारा मुकाबला किया। उग्रपंथी, अर्ध-सामूहिक राष्ट्रवाद के अन्य राजनैतिक अग्रदूत, जिन्होंने व्यापक जल-लामबंदी का लक्ष्य रखा। वे थे फ्रांस में पॉल डार्ल्यूडस की लीग ऑफ पेट्रिएटस और 1880 के दशक में फ्रांस में बोलनजिस्ट आंदोलन। अखिल जर्मनवाद और उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में आस्ट्रिआई नेता जार्ज रिटर वॉन स्नेरर का नस्लीय राष्ट्रवाद, चेक नेशनल सोशलिस्ट पार्टी (1904) में मोरिस बेरेस का समाजवादी राष्ट्रवाद और जर्मन नेशनल सोशलिस्ट वर्कस पार्टी (डी.एन.एस.ए.पी.) और उसके नेता वॉल्टर रिहल और रूडोल्फ जंग बाद के हिटलरवादी विचारों और कार्यक्रम के नजदीक थे।

बोध प्रश्न 1

1) फासीवादी आन्दोलन के विकास में युद्ध का क्या योगदान था?

....

....

....

....

....

2) फासीवाद के सामान्य लक्षण क्या हैं?

....

....

....

....

....

3) रूढ़िवादी दक्षिणपंथ को आप फासीवादी आंदोलन से कैसे अलग करेंगे? लगभग 5 पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

3.4 इटली में फासीवादी राज्य की आधारभूमि

अब तक आप फासीवाद के सामान्य लक्षणों से परिचित हो चुके हैं। अब हम कुछ उदाहरणों का अध्ययन करेंगे। जर्मनी, इटली और स्पेन फासीवाद के कुछ उदाहरण हैं। जर्मन फासीवाद पर अगली इकाई में विचार किया जाएगा। यहां हम इटली और स्पेन में जन्मे फासीवाद के चेहरे को पहचानने का प्रयास करेंगे।

3.4.1 फासीवादी आन्दोलन का उदय और सत्ता पर नियंत्रण

इटली में फासीवाद के उदय के लिए कुछ मौजूदा घटनाएं और प्रवृत्तियां जिम्मेदार थीं। युद्ध में इटली की भागीदारी के मुद्दे पर 1914 में रैडिल सिंडेकेलिस्ट कन्फिडिरेशन ऑफ ट्रेड यूनियन में विभाजन हो गया। सिंडेकेलिस्ट 'उत्पादकों' की 'आत्म मुक्ति' में विश्वास रखते थे जो 'राज्य सत्ता की प्राप्ति के ज़रिए नहीं बल्कि 'कारखाना स्तर पर विनियमन' द्वारा प्राप्त किया जा सकता था। समय आने पर मज़दूरों के सिडिकेट या संघों को राज्य का स्थान लेना था जिन्हें उत्पादकों के आत्म शासन के औज़ार के रूप में काम करना था। फासीवाद की ओर बढ़े सिंडिकेलिस्टो ने अतिराष्ट्रवाद का अनुगमन किया और उन्होंने राष्ट्रों को प्रोलेटेरियन या प्लुटोक्रेटक (वर्ग संदर्भ में) के रूप में व्याख्यायित किया। भविष्यवादियों ने परम्परागत रीति रिवाजों और मौजूदा संस्थाओं को अस्वीकार कर दिया था और हिंसा का पक्ष लिया था। वे गति, शक्ति, मोटर और मशीन या सभी प्रकार की आधुनिक प्रौद्योगिकीय संभावनाओं से मुग्ध थे। इनके विचारों का भी काफी प्रभाव पड़ा। मुसोलिनी का नेतृत्व, और उसके जनता को लामबंद करने और राष्ट्रीय क्रांति संबंधी समाजवादी विचार और दृष्टिकोण तीसरा प्रमुख कारक था।

फासीवादियों ने आरंभ में मिलान में अपने कार्यक्रम के तहत *फासी डी कोमबैटिमेन्टो* (1919) की शुरुआत की जिसने गणतंत्र की स्थापना की मांग की और उग्र जनतांत्रिक और समाजवादी परिवर्तन किए जाने की आवाज़ उठाई। उन्होंने युद्ध के समय पूंजीपतियों द्वारा कमाए गए भारी मुनाफे को जब्त करने, बड़े ज्वाइंट स्टॉक कम्पनियों को दबाने और भूमिहीन किसानों के लिए ज़मीन की मांग की। 1920 में इस कार्यक्रम से ये वामपंथी तत्व निकाल दिए गए और केवल भावनात्मक स्तर पर घोर राष्ट्रवाद, युद्ध का औचित्य और राष्ट्रीयता महानता के सरोकारों तथा समाजवादी दल के प्रति विद्वेष जैसी भावनाओं को स्थान दिया। खासकर उत्तरी और मध्य इटली-पो वैली और टसकनी-में फासीवादी दस्तों का जन्म हुआ जिसका नेतृत्व अवकाश प्राप्त सैनिकों ने किया और स्थानीय पुलिस और सेना ने समर्थन दिया। इन दस्तों का निर्माण वामपंथ के वास्तविक या दिखावटी खतरे का सामना करने के लिए किया गया। इन दस्तों का अनुशासित करने के लिए जनवरी 1923 में मुसोलिनी ने स्थानीय दस्तों को अनुशासित करने और इनके नेताओं की शक्तियों पर पाबंदी लगाने के लिए फासीवाद अर्ध-सैन्य दस्तों का निर्माण किया।

रोम में फासीवादियों ने जुलूस का जिस अव्यवस्थित ढंग से संयोजन किया (अक्टूबर 1922) उससे यह पता चलता है कि यदि राजा में निर्णय लेने की शक्ति होती और उन्हें सेना के एक भाग का मूक समर्थन न मिला होता तो उनका क्रांतिकारी विद्रोह कभी सफल नहीं होता। 29 अक्टूबर 1922 को राजा ने मुसोलिनी को प्रधानमंत्री नियुक्त किया जिसने सत्ता प्राप्त करने के बाद कुछ दिनों तक संवैधानिक नियमों का पालन किया। हालांकि मुसोलिनी ने यह महसूस किया कि सत्ता में बने रहने के लिए बहुवर्गीय राष्ट्रवादी आंदोलनों को भी दक्षिणपंथी ताकतों से समझौता या गठबंधन करना पड़ेगा। फरवरी 1923 में फासीवादी दल और इतालवी राष्ट्रवादी संघ (नेशनलिस्ट एसोसिएशन ऑफ इटली) का विलय हो गया। सेना के अधिकारियों, शिक्षाविदों, प्रशासकों और व्यापारियों का व्यापक समर्थन प्राप्त करने के लिए रूढ़िवादी, संभ्रांत, राजतंत्रीय दक्षिणपंथी दल के साथ यह विलय ज़रूरी था। परम्परागत संभ्रांत वर्ग से समझौता करने की छाप फासीवाद दल और राज्य पर भी पड़ी। 1923 में एसेरबो बिल पारित करने में परम्परागत दक्षिणपंथी समूहों ने फासीवादियों को समर्थन दिया जिसमें यह प्रस्ताव किया गया कि चुनाव में एक चौथाई मत प्राप्त कर लेने पर किसी दल को अपने आप संसद में दो तिहाई सीटों का बहुमत प्राप्त हो जाएगा।

3.4.2 शासन व्यवस्था का सुदृढ़ीकरण

ताकत और धोखाधड़ी का इस्तेमाल कर फासीवादियों ने 1924 का चुनाव आसानी से जीत लिया और 1924 में समाजवादी प्रतिनिधि मेटेओट्टी की हत्या से उत्पन्न अस्थाई अफरा-तफरी के बाद मुसोलिनी तानाशाही को संस्थागत रूप देने के काम में लग गया। अक्टूबर 1926 में सभी विरोधी दलों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। अखबारों पर बंधन लगा दिए गए और राज्य की सुरक्षा के लिए सार्वजनिक सुरक्षा कानून (1926) बनाकर व्यक्तिगत स्वतंत्रता समाप्त कर दी गई। सिंडिकेट कानून (1926) बनाकर उत्पादन के हित में श्रम को राज्य के नियंत्रण में ले लिया गया। कानून बनाकर फासीवादी संघों को वार्तालाप में एकाधिकार दिया गया। अनिवार्य मध्यस्थता के लिए ट्रिब्यूनल बनाए गए और हड़तालों तथा काम रोको जैसे आंदोलनों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। फासीवाद दल को भी नौकरशाही के ढांचे में ढ़ाला गया। अक्टूबर 1926 में बनाए गए दल के नए संविधान में सभी शक्तियों का केंद्रीकरण किया गया जिसमें सभी पदों पर नियुक्तियां ऊपर से आरोपित करने का प्रावधान था। 1927 में मुसोलिनी ने दल और राज्य के बीच के संबंध के प्रश्न को सुलझा लिया जिसमें राज्य को वर्चस्व दिया गया। 1926 और 1929 के बीच 60 हज़ार दस्ता सदस्यों को दल से निष्काषित कर दिया गया, फासिस्ट मजदूर संघों के बीच सिंडीकेलीस्ट विचारों को नियंत्रित करने की कोशिश की गई और सिंडिक्लिस्टों के नेता एडमोंडो रोसोनी को 1928 में हटा दिया गया 1920 और 1930 के दशकों में आरंभिक फासीवाद के उत्पादकवादी और आधुनिकीरण के लक्ष्यों को, अर्ध सामूहिकता की सिंडिकेलिस्ट परियोजनाओं को औपचारिक रूप से समाप्त किए बिना; निजी पूंजी से समझौता कर छोड़ दिया गया। नियोक्ताओं और कर्मचारियों के 22 नए संयुक्त निगमों की सहायता से 1934 में औपचारिक रूप से निगम राज्य (कॉरपोरेट स्टेट) की स्थापना की गई। परंतु इनके पास आर्थिक निर्णय लेने का वास्तविक अधिकार नहीं था।

मुसोलिनी ने चर्च को भी प्रसन्न करने की कोशिश की। युद्ध के दौरान टूटे हुए चर्चों की मरम्मत करने के लिए बड़ी अनुदान राशियां प्रदान की गईं। 1923 में माध्यमिक विद्यालयों में धार्मिक शिक्षा को अनिवार्य बना दिया गया। 1929 में लैटेरन समझौते पर हस्ताक्षर करके रोमन समस्या (रोम और पोप की प्रभुसत्ता का प्रश्न) को अन्तिम रूप से निपटा दिया गया। वैटिकन को संप्रभु राज्य बना दिया गया। 1860 और 1870 में पोप के क्षेत्रों के नुकसान के मुआवजे के तौर पर धन प्रदान किया गया। चर्च के प्रमुख संगठन कैथोलिक ऐक्शन को स्वतंत्रता प्रदान की गई बशर्ते कि वे राजनीति से अलग रहें।

3.4.3 फासीवादी जनसंगठनों के प्रमुख प्रकार

शीर्ष पर, 1922 में एक परामर्श संस्था के रूप में फासीवादी महापरिषद की स्थापना की गई जिसे 1928 में राज्य का एक अंग बना दिया गया परंतु निचले स्तर पर काम कर रहे संगठन ज़्यादा महत्वपूर्ण थे। फासीवाद दस्तों के बीच से अर्ध-सैन्य दस्ते विकसित किए गए। उन्हें सभी तरह के अस्त्र चलाने का प्रशिक्षण दिया जाता था और इसके केंद्र में पेशेवर सैनिक हुआ करते थे। इस दस्ते के कार्यकर्ताओं को फासीवाद की घुट्टी पिलाई गई और विरोधियों के खिलाफ कार्य करने की प्ररेणा दी गई। बलिला नामक अर्ध सैनिक प्रचारक संस्था में युवा मोर्चा और युवा फासीवादी सम्मिलित थे। इन संगठनों पर दल का अधिकारिक नियंत्रण था। सैन्य-अनुशासन जैसा मज़दूरों का फासीवादी संघ एक दूसरा प्रमुख जनसंगठन था। 1925 में गठित ओपेरा नाजियोनाले डोपेलवोरो (लोगों के मनोरंजन और आराम करने के साधन और तरीके निर्धारित करने हेतु) की स्थापना लोगों की सहमति प्राप्त करने के लिए की गई थी और उसका मुख्य उद्देश्य लोगों के अवकाश काल को संयोजित करना था। इसके तत्वाधान में स्थानीय क्लब और पुस्तकालय, बार, बिलियर्ड हॉल और खेलकूद के मैदानों से युक्त सुविधाओं वाले कई केंद्र स्थापित किए गए। डोपोलवोरो द्वारा सम्मेलनों, नाटकों और फिल्म प्रदर्शनियों का आयोजन किया जाता था, लोगों को घुमाने-फिराने की व्यवस्था की जाती थी और बच्चों के लिए गर्मी की छुट्टियों में सस्ती दर पर यात्रा आयोजित की जाती थी। 1930 के दशक में इटली में ऐसी 20 हज़ार संस्थाएं थीं।

3.4.4 फासीवादी राज्य की प्रकृति

हालांकि कुछ लोग इसे 'सर्वसत्तात्मक' राज्य की संज्ञा देते हैं परंतु राज्य की सत्ता प्रमुख रूप से संघर्ष के क्षेत्रों तक ही सीमित रही, इसका सम्पूर्ण नियंत्रण स्थापित न हो सका। नाजी जर्मन राज्य के विपरीत इसका रोज़मर्रा के कार्यों पर कभी भी संस्थागत नियंत्रण स्थापित न हो सका। नौकरशाही संरचना कभी भी जीवन के सभी क्षेत्रों में हस्तक्षेप करने में सफल नहीं रही। यह एक ऐसी तानाशाही थी जो बहुलतावादी या अर्धबहुलतावादी व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करती थी परंतु यह दार्शनिक दृष्टि से नहीं बल्कि संस्थागत दृष्टि से बहुलतावादी थी। बड़े व्यापार, उद्योग, वित्त और यहां तक कि सेना ने भी काफी हद तक अपनी स्वायत्ता कायम कर रखी थी जबकि श्रमिकों के हितों को ज़्यादा से ज़्यादा सैन्य-अनुशासन जैसे नियंत्रित किया गया। प्रशासनिक तंत्र में किसी प्रकार का शुद्धीकरण नहीं किया गया। नौकरशाही को कभी भी व्यवस्थित रूप से बदलने की कोशिश नहीं की गई और पहले की तरह इस पर पेशेवर अधिकारियों का वर्चस्व रहा। इसी प्रकार पुलिस और कार्बिनियेरी का भी राजनैतिकरण नहीं हुआ अर्थात उस पर दलीय पदाधिकारियों का कब्जा नहीं हुआ; हालांकि 1932 में ओवरा नामक नई राजनैतिक पुलिस का गठन हुआ। फासीवाद ने सत्ता हस्तगत करने के क्रम में स्थापित संस्थाओं और संभ्रांत लोगों से समझौता किया और कभी भी इस समझौते की सीमाओं से पूरी तरह उबर नहीं सका।

इस शासन के आंरभिक काल में देश के आर्थिक जीवन में राज्य का हस्तक्षेप न्यूनतम था। मंदी के दौरान प्रत्यक्ष राज्य निवेश मात्र एक आपातकालीन उपाय था। 1933 में आई.आर.आई (इंस्टि्यूट फॉर इन्डस्ट्रियल रिकंस्ट्रक्शन) और आई.एम.आई. (इंस्टि्यूटो मोबिलियेर इटीलियानो) की स्थापना के बाद राज्य का हस्तक्षेप बढ़ा। परंतु यहां तक कि 1940 में भी आई.आर.आई. के पास इटली के उद्योग की समस्त पूंजी का लगभग 17.8 प्रतिशत पूंजी ही थी। राज्य ने मुख्य रूप से रासायनिक, विद्युत ओर मशीन उद्योग को बढ़ावा दिया और रेलवे के बिजलीकरण तथा टेलीफोन और रेडियो उद्योग को बढ़ावा देकर आधुनिकीकरण पर बल दिया। हालांकि इटली के फासीवादियों ने यह घोषणा कर

रखी थी कि इटली 'स्थायी तौर पर युद्ध की स्थिति' में है परंतु इसमें आर्थिक सैन्यवाद देखने को नहीं मिलता है अर्थात सैन्य उत्पादन में अधिकांश निवेश नहीं हुआ था। इसके अलावा इटली में मानववादी बौद्धिक वर्ग का वर्चस्व बना रहा और तकनीकी विशेषज्ञों की तुलना में उनका महत्त्व खत्म नहीं हुआ।

1930 के दशक में फासीवादी राज्य ने मज़दूरों के लिए कुछ कल्याणकारी योजनाएं भी शुरू की। 40 घंटे के कार्य सप्ताह की शुरुआत से आय में आई कमी की कुछ हद तक क्षतिपूर्ति के लिए 1934 में परिवार भत्ता प्रदान किया गया। मज़दूरी समझौतों के अन्तर्गत बीमारी और दुर्घटना के लिए बीमा की भी व्यवस्था की गई और 1930 के दशक के उत्तरार्द्ध में क्रिसमस बोनस और छुट्टी वेतन की व्यवस्था की गई।

इतालवी राज्य में कम से कम 1937 तक नस्लवादी यहूदी विरोधी नीति शामिल नहीं थी। वहां लगभग 45,000 यहूदी परिवार अमन-चैन से रहते थे। यहां तक कि 1938 में दल में 10,125 यहूदी सदस्य थे। हालांकि नवम्बर 1938 में नाज़ियों के प्रभावस्वरूप नस्ली कानून पारित किए गए जिसके द्वारा यहूदियों से शादी करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया, सार्वजनिक सेवाओं में उन्हें नौकरी वंचित किया जाने लगा, फासीवादी दल का सदस्य नहीं बनाया जाने लगा और उनके पास 50 हेक्टेयर से ज़्यादा भूमि नहीं हो सकती थी।

3.4.5 पतन और सैलो गणतंत्र

1943 में मुसोलिनी के शासन को उखाड़ फेंका गया और इसका सामना करने के लिए उसके पास कोई सैनिक तैयारी नहीं थी। इसके बाद पुराने रूढ़िवादी दक्षिणपंथियों की एक तदर्थ गठबंधन की सरकार बनी जिसमें राजतंत्र, सेना और उच्च समृद्ध सम्पतिवान वर्ग को प्रतिनिधित्व मिला और इसका नेतृत्व नरम फासीवादी नेताओं ने किया। इस सैलो गणतंत्र में मज़दूर परिषदों के लिए कुछ नियम बनाए गए और मुनाफे में उनका हिस्सा तय किया गया तथा उद्योगों का राष्ट्रीयकरण करने का प्रयास किया परंतु यह उग्र-सुधारवाद एक मरते हुए तंत्र का अंतिम प्रयास था।

बोध प्रश्न 2

1) इटली में फासीवाद के उदय के लिए उत्तरदायी वैचारिक धाराओं का उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

....

2) मुसोलिनी द्वारा सत्ता प्राप्त करने के बाद फासीवादी राज्य की प्रकृति में कैसे बदलाव आया?

....

....

....

....

....

3) इटली का फासीवाद जर्मनी से किन अर्थों में भिन्न था?

....

....

....

....

....

3.5 स्पेन में दक्षिणपंथी तानाशाही और आंदोलन

इटली के बाद स्पेन एक महत्वपूर्ण देश था जिसने फासीवादी सरकार का उदय देखा। स्पेन में 1923-30 के बीच जेनरल मिगुएल प्राइमो डी रिवेरा ने अधिनायकवादी सरकार के प्रथम चरण की नीवं रखी। इसका उदय जनतांत्रिक सुधारों के लिए समाजवादी दबाव के जवाब में सैन्य प्रतिक्रिया के रूप में हुआ। इसके अलावा मोरोक्को के सैनिक अभियान में आबिद-अल-करीम रिफियन व्रिदोहियों ने स्पेन की सेना की सैन्य कमान के पतन के बाद उसके नौ हज़ार सैनिक मार दिये थे। स्पेन की संसद अपनी तमाम कोशिशों के बावजूद इस सैनिक अभियान की असफलता का 'उत्तरदायित्व' तय करने में असफल रही थी। आरंभ में स्पेनिश संसद को समाप्त करने को एक स्थाई कदम के रूप में देखा जा रहा था परंतु धीरे-धीरे तानाशाही संस्थागत रूप लेने लगी। इस तानाशाही को कुछ लोग 'ऊपर से आरोपित फासीवाद' कहते हैं। यह फासीवाद आर्थिक राष्ट्रवाद, संरक्षणवाद और 'सामाजिक अव्यवस्था' को रोकने के लिए एक 'मज़बूत' और 'पदानुक्रमिक' कार्यकारी की मांग पर आधारित था और इसमें ऊपर से ही लोगों को लामबंद करने का प्रयास किया गया। यह खासतौर पर एनारको-सिंडिकेलिस्ट लेबर यूनियन, मज़दूरों की राष्ट्रीय फैडरेशन (सी.एन.टी.) और सोसिएलिस्ट यूनियन यू.जी.टी. (यूनियन जेनरल डे ट्राबाजाडोर्स) का विरोधी था। तानाशाह ने लोकप्रिय लामबंदी को नियंत्रित करने के लिए एक यूनियन पेट्रोटिका पार्टी बनाई। यह दल उग्र कैथोलिक दर्शन पर आधारित था और इसमें कृषीय हितों का समर्थन मिला था। रिवेरा ने सोमाटेन को एक संस्थागत रूप दिया जो एक परम्परागत कैटेलन अर्ध-सैन्य दल था जिसने संकट और हड़तालों के दौरान पूंजीवादियों की रक्षा की। परंतु इस नए अर्ध-सैन्य दल पर कानून व्यवस्था लागू करने के लिए सरकारी अधिकारियों का ही सहायक था और कभी भी यह उग्र सुधारवादी, फासीवाद सैन्य दल का दर्जा प्राप्त न कर सका।

रिवेरा की तानाशाही की समाप्ति के बाद जनतंत्र का एक नया चरण आरंभ हुआ और स्पेन की राजनीति में वामपंथी और दक्षिणपंथी दोनों ही उग्र दिशाओं में चलने लगे। 1933-36 के दौरान कॉनफेडरेशन ऑफ स्पेनिश राइट्स ग्रुप या सेडा प्रमुख रूढ़िवादी सत्तावादी दल था। इसके युवा आन्दोलन (जे.ए.पी.) में फासीवाद की कुछ प्रवृत्ति थी परंतु दोहरी प्रवृति का बना रहा। कार्टलिस्ट और अल्फोनसिनो मोनार्किस्ट दक्षिणपंथी सुधारवाद के दूसरी धारा का नेतृत्व करते थे। अल्फोनसिनो नव राजतंत्री फ्रांसीसी दक्षिणपंथी समूह होने के साथ-साथ इतालवी फासीवाद का दक्षिणपंथी राष्ट्रवादी दल से प्रभावित था। उनकी पत्रिका एसिओन स्पेनोला और उनके प्रमुख विचारक जोसे काल्वो सोटेलो परम्परागत संभ्रांत सेना, भूमिपतियों, चर्च आदि की सहायता से एक सर्वसत्तात्मक तानाशाही राज्य स्थापित करने का विचार प्रस्तुत कर रहे थे। वह एक प्रत्यक्ष संस्था की जगह सामाजिक-आर्थिक हितों का प्रतिनिधित्व करने वाले एक अप्रत्यक्ष कॉरपोरेट चैम्बर की स्थापना करना चाहते थे। बाद में फ्रैंको शासन के दौरान सोटेलो के विचारों को संरचनागत और नीतिगत रूप दिया गया।

स्पेन की राजनीति में सीधे-सीधे तौर पर फासीवाद की वकालत करने वाले समूहों की संख्या कम थी। 1931 और 1934 के बीच विद्यार्थियों के एक छोटे से समूह ने जुनतास डे ऑफेन्सिवा नेशनल सिंडिकेलिस्ट (जोन्स) का संगठन किया। उनके कार्यक्रम में इटली के फासीवाद की झलक मिलती थी।

अक्टूबर 1933 में राष्ट्रीय सर्वसत्तात्मक आंदोलन को रूप और सैद्धांतिक आधार प्रदान करने के लिए जोसे एंटोनियो प्राइमो डे रिवेरो ने बास्क व्यापारियों से प्राप्त वित्तीय मदद से फैलान्ज एस्पेनोला (या स्पेनिश फिनिक्स) की स्थापना की। 1934 के आरंभ में जोन्स का फैलान्ज में विलय हो गया। हालांकि राजनैतिक दृष्टि से इसका कोई महत्त्व नहीं था और यह मुख्य रूप से विद्यार्थियों पर ही निर्भर था क्योंकि इसे निम्न या मध्य वर्ग का समर्थन प्राप्त नहीं था। 1935 तक इसने राष्ट्रीय श्रमिक संघवाद का अधिक परिवर्तनवादी स्वर अपना लिया और इटली के फासीवाद की पूंजीवादी और संकीर्णतावादी कहकर आलोचना की। फैलान्ज ने राष्ट्रवादी दर्शन की वकालत की, वे 'सत्ता, पदानुक्रम और व्यवस्था' में विश्वास रखते थे और उनके 27 सूत्रीय कार्यक्रम में राष्ट्रीय-श्रमिक संघवादी राज्य का विकास, बैंकों का राष्ट्रीयकरण, ऋण सुविधाएं और बड़े भूमिपतियों की ज़मीनों को कब्जे में लेना शामिल था। उनके कार्यक्रम में इतालवी फासीवादियों के प्रारंभिक उग्र सुधारवादी कार्यक्रमों की झलक मिलती थी। राजनैतिक स्तर पर पादरी-विरोधी होने के बावजूद फेलान्जवाद की कैथोलिक धार्मिक पहचान ही बनी रही। स्पैनिश दक्षिणपंथियों के अधिकांश हिस्से फासीवादी हो गए परंतु खुद फैलान्ज जन समर्थन प्राप्त करने में असफल रहा। 1936 के चुनाव में इसे मात्र 44,000 या कुल मतों का 0.7 प्रतिशत मत ही प्राप्त हुआ। एकीकृत स्पैनिश राष्ट्र-राज्य के खिलाफ कैटोलन्स और बास्क के तीव्र क्षेत्रीय राष्ट्रवाद (या उप-राष्ट्रवाद) के कारण भी अंशतः स्पेन में उग्रवादी राष्ट्रवादी दर्शन असफल रहा। इसके अलावा स्पैनिश गृह युद्ध (1936-1939) के दौरान क्रांतिकारी-प्रतिक्रांतिकारी संघर्ष का ध्रुवीकरण हो गया जिसमें नेतृत्व पूर्णतः क्रांतिकारी राष्ट्रीय सेना के पास चला गया जिसने फ्रैंको शासन की स्थापना की और फैलान्ज सैनिक तानाशाही के अधीनस्थ हो गया। 1937 में फ्रैंको ने फैलान्ज आंदोलन को अपने हाथ में ले लिया और फैलान्जवाद के आधार पर एक समन्वयवादी विषम राज्य दल की स्थापना की। इस नए दल में फैलान्जवादी, कैलिस्ट और विभिन्न प्रकार के दक्षिणपंथी सदस्य और जो भी इसमें शामिल होना चाहते थे उन सभी को मिलाकर एक नया दल बनाया गया। फैलान्ज कार्यक्रम को सरकारी दर्जा प्रदान किया गया परंतु भविष्य की ज़रूरतों के अनुसार इसमें सुधार किया जाता रहा। इस नए तानाशाही फ्रैंकोवाद राज्य में पुराने फैलान्जवादियों द्वारा बहुत थोड़ी सी भूमिका अदा की गई और यहां तक कि नए राज्य दल फैलान्ज स्पेनोला ट्रैडिशियोनलिस्टा के प्रशासन में भी उनकी भूमिका नगण्य रही। आरंभिक फ्रैंकोइज्म (फ्रैंकोवाद) में फासीवाद के प्रमुख तत्व मौजूद थे परंतु दक्षिणपंथी, प्रेटोरियन, कैथोलिक और अर्ध-बहुलतावादी संरचना के बीच यह इस तरह प्रतिबंधित था कि इसे 'अर्ध फासीवाद' वर्ग में रखना ही संभवतः अधिक सही होगा। फ्रैंकोइज्म की तुलना इतालवी फासीवाद से की जा सकती है जहां इसने राज्य फासीवाद दल का उपयोग किया और एक सीमित दायरे में कार्यकारी तानाशाही स्थापित की। 1945 तक एक अंशतः संगठित अर्ध-फासीवादी राज्य के स्थान पर एक गैर 'संगठित नौकरशाही' आधारित सर्वसत्तात्मक शासन की स्थापना हुई।

3.6 फ्रांसीसी दक्षिणपंथी और वीशी सरकार

फ्रांस में कई फासीवाद समूह थे परंतु इनमें से कोई भी दो प्रतिशत से ज़्यादा मत हासिल करने में सफल नहीं हो सका, जो फ्रांसीसी मतदान व्यवस्था में प्रतिनिधित्व प्रदान करने के लिए न्यूनतम शर्त थी। 1899 में स्थापित फ्रांसीसी ऐक्शन फ्रांसेस एक प्रकार से फासीवादी

प्रतिक्रियावदी आंदोलन का आरंभिक रूप था। ज्योर्ज वल्वा ला फैसो (1925 में स्थापित) ने श्रमिक संघवाद और राष्ट्रवाद को एक साथ मिलाने की कोशिश की। जुनएस यूथ या देशभक्त युवा (1924-1928) भी सैन्य पद्धति पर संगठित था और दंगे फसादों में विश्वास रखता था। कुछ अन्य समूहों ने व्यापक आधार भी अपनाया। फ्रेंच सोलिडैरिटी (1933) और क्रोक्स डी फ्यू ऐसे ही समूह थे। क्रॉक्स डी फ्यू को बड़े व्यापार और वित्त का समर्थन प्राप्त था। राजनैतिक तौर पर इसका झुकाव कैथोलिक संकीर्णतावाद की ओर था। 1936 में पोपुलर फ्रंट सरकार (लोकप्रिय मोर्चा) द्वारा प्रतिबंधित किए जाने के बाद शीघ्र ही यह फ्रांसीसी सोशल पार्टी के रूप में पुनः संगठित हुआ। 1933 में मार्सेल बकार्ड द्वारा संगठित फ्रांसेस्टेस एक दूसरा दक्षिणपंथी समूह था।

पूर्व साम्यवादी जैक्स डोरियेट के नेतृत्व में गठित फ्रेंच पापुलर पार्टी पोपुलेरे फ्रांसेसे एक प्रकार से समाजवाद और राष्ट्रवाद का मिलाजुला रूप था। मार्शल डेट, जो समाजवाद से अलग हट चुका था, ने भी राष्ट्रीय नियोजन और उत्पादन ताकतों के एकीकरण की वकालत की। हालांकि जर्मन आधिपत्य के समय डेट फासीवाद की ओर बढ़ा और उसके रेजेम्बलेमेंट नेशनल पोपुलर (1941) ने फ्रांसीसी फासीवाद की अति वामपंथी शाखा गठित की।

जनतांत्रिक गणतंत्र के लिए समर्पित दलों (समाजवादी, साम्यवादी और मूलगामी सुधारवादी) ने फासीवाद के खिलाफ संयुक्त मोर्चा बनाया (1934-35)। 1936 में वामपंथियों द्वारा चुनाव में आगे बढ़ने और 1940 तक लोकप्रिय मोर्चा के समर्थन से बनी गठबंधन सरकार के गठन के बाद वास्तविक या कल्पित फासीवादियों द्वारा सत्ता पर कब्ज़ा प्राप्त करने का खतरा कम हो गया।

वीशी सरकार

फ्रांस के युद्ध में फ्रांसीसी सेना के बुरी तरह पराजित होने से युद्ध विराम की मांग उठने लगी। इस युद्ध में फ्रांस के 92,000 सैनिक मारे गए थे, 18,50,000 सैनिक जर्मन सेना द्वारा बंदी बना लिए गए थे। इसके बाद ही उप-प्रधानमंत्री मार्शल पेटेन और नए सेनाध्यक्ष वेगांड ने फ्रांस के शस्त्रीकरण की मांग की। फ्रांस के प्रधानमंत्री पॉल रेनो ने 16 जून 1940 को इस्तीफा दे दिया और मार्शल पेटेन ने युद्ध विराम की शर्तें तैयार की जिसके तहत फ्रांस की सेना में सैनिकों की संख्या घटाकर 1,00,000 कर देनी थी जिनका काम केवल कानून व्यवस्था की देख रेख करना था। इसके अंतर्गत होम फ्लीट को विघठित किया जाना था, फ्रांस के अधिकांश हिस्सों पर जर्मनी का आधिपत्य होना था, आधिपत्य का खर्च भी फ्रांस को उठाना था और अंतिम शांति समझौता होने तक फ्रांस के कैदियों को बंधक के रूप में रखा जाना था। मार्शल पेटेन ने 1 जुलाई 1940 को वीशी के एस्पा शहर के सीलन भरे और असुविधाजनक होटल के बंद कमरे में अपनी सरकार बनाई। एक पराजित नेशनल एसेम्बली द्वारा नया संविधान बनाने का अधिकार पेटेन को दिया गया और मार्शल को 'पूर्णकार्यकारी और विधाई शक्तियां' प्रदान की। पेटेन के दृष्टिकोण को 'कार्य, परिवार और मातृभूमि' (फ्रांसीसी भाषा में ट्रावेल, फैमिल और पाट्री) के रूप में देखा जा सकता है जो गणतंत्रवादियों के स्वतंत्रता, बंधुत्व और समानता का ही पर्याय था। वीशी सरकार सामाजिक पदानुक्रम और व्यवस्था को कायम रखने वाले इच्छुक 'संकीर्णतावादी संभ्रांत समूहों' का प्रतिनिधित्व करती थी। फासीवाद की अपेक्षा ऐक्शन फ्रांसेसे जैसे आंदोलनों से जुड़ा परम्परावाद इस सरकार की प्रमुख विशेषता थी। वीशी सरकार ने सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए नैतिक निर्देश जारी किए। घरेलू महिलाओं और माताओं की भूमिका को महिला मंडित किया गया और घर से बाहर निकलकर काम करने वाली महिलाओं को हतोत्साहित करने का प्रयास किया गया। इसके परिणामस्वरूप इस शासन व्यवस्था को पादरियों का व्यापक समर्थन प्राप्त हुआ। अर्थव्यवस्था का उपयोग जर्मन हित

में किया जाने लगा। 1943 तक कृषि उत्पाद का 15 प्रतिशत और औद्योगिक उत्पादन का 40 प्रतिशत आधिपत्य शुल्क के रूप में जर्मनी को निर्यात किया गया। उत्पादकों के आत्म-नियमन के लिए दिसम्बर 1940 में स्थापित कृषक निगम तेज़ी से नौकरशाही तंत्र में बदलने लगा और व्यापार में सरकारी हस्तक्षेप बढ़ गया। उद्योग में भी जर्मनों की बढ़ती मांग के लिए योजना बनाई गई जिसमें युद्ध के बाद तकनीकी तंत्र के विकास को बढ़ावा मिला। व्यापारियों को फायदा पहुंचाने के लिए बनाई गई नीतियों को पितृसत्तात्मक राष्ट्रभक्ति और निगमवादी संरचनाओं का जामा पहनाया गया। मज़दूर संघों पर प्रतिबंध लगा दिया गया और सभी प्रकार के मज़दूर संघों को क्रूरता से दबा दिया गया। स्थानीय स्तर पर निर्वाचित परिषदों के स्थान पर मेयरों की नियुक्ति की गई। व्यापक नागरिक सेवा के बल पर जनता और वीशी सरकार के बीच मध्यस्थता करने का प्रयास किया गया। इससे गैर-निर्वाचित सामाजिक और प्रशासनिक संभ्रांत वर्ग का प्रभाव बढ़ा और नौकरशाही और निगमों के द्वारा इन्होंने अपना नियंत्रण बढ़ाया।

इस समर्थन के बदले वीशी ने उनसे युद्ध विराम की शर्तों पर और अनुकूल शांति समझौता में रियायतों की अपेक्षा की थी। हालांकि 1942 में अनाधिपत्य वाले क्षेत्र में जर्मनों के प्रवेश से वीशी की स्थिति एक परावलंबी उपग्रह के समान हो गई। आरंभ में कुछ ही फासीवादी सरकार के साथ जुड़े हुए थे। दिसम्बर 1943 में मार्शल डेट और जोसेफ डार्नेड को मंत्री बनाया गया।

वीची का यहूदी-विरोध नस्लवाद की अपेक्षा राष्ट्रवादी और कैथोलिक अधिक था। युद्ध विराम के तहत वीची सरकार को जर्मन मूल के यहूदी शरणार्थियों को लौटाना पड़ा। अक्टूबर 1940 में एक कानून बनाकर बिजली घरों, नागरिक सेवाओं, अध्यापन और पत्रकारिता में यहूदियों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया गया और अधिकांश पेशों में उनके लिए कोटा निर्धारित कर दिया गया। हालांकि अनुभवी सैनिकों और पूर्ण रूप से घुले-मिले यहूदियों को इससे मुक्त रखा गया। वीशी के सहयोग से आधिपत्य क्षेत्र में यहूदियों की सम्पत्ति जब्त कर ली गई और विदेशी यहूदियों को वापस भेज दिया गया। 1941 की ग्रीष्म ऋतु के बाद अनाधिपत्य क्षेत्र में भी इन नीतियों को लागू कर दिया गया।

मित्र राष्ट्रों की सेना 6 जून 1944 को नॉर्मेडी के बन्दरगाह पर उतरी और 25 अगस्त 1944 को पेरिस स्वाधीन हुआ। 1944 के अंत तक अधिकांश फ्रांस जर्मन अधिपत्य से मुक्त हो गया। जर्मन अधिकारियों ने वीशी सरकार को पूर्वी फ्रांस में जाने के लिए बाध्य किया और अन्ततः उसे स्वयं जर्मनी में ही बंधक बना लिया गया।

3.7 दक्षिणपंथी आंदोलन और तानाशाही : पूर्वी मध्य यूरोप और बाल्टिक राज्य

इटली और स्पेन के अलावा यूरोप के कई देशों में फासीवाद संक्षिप्त राजनैतिक प्रयोग और संगठन के रूप में भी सामने आया। इन सभी संगठनों में फासीवाद के आधारभूत तत्व विद्यमान नहीं थे। फासीवाद की मात्रा और व्यापकता में भी फर्क था। आइए, पोलैंड, हंगरी, बाल्टिक राज्यों और चेक-स्लाव देशों का उदाहरण देखा जाए।

3.7.1 पोलैंड

पोलैंड में फासीवाद आंदोलन कमज़ोर था। 1926 में पिलसुडस्कि सैनिक विद्रोह द्वारा तख्ता पलटने के परिणामस्वरूप एक मज़बूत सर्वसत्तात्मक शासन की स्थापना हुई। 1935 तक यह नरमपंथी अर्ध-बहुलतावादी व्यवस्था के रूप में काम करता रहा। पश्चिमी पोलैंड की नेशनल डेमोक्रेटिक पार्टी एक जन संसदीय दल था जिसने यहूदी विरोधी नीति की

वकालत की और अन्य राष्ट्रीय अल्प संख्यकों के प्रति अधिक दमनात्मक नीति अपनाई। 1930 के दशक में इसकी उग्र सुधारवादी युवा शाखा उग्र राष्ट्रीय सुधारवादियों के रूप में अलग हो गई और ए.वी.सी. और फलांगा जैसे दो फासीवादी संगठनों को जन्म दिया। फलांगा की विचारधारा अति कैथोलिकवादी थी और इसने अर्थव्यवस्था में निजी क्षेत्र की समाप्ति और एक प्रकार के राष्ट्रीय समाजवाद की स्थापना पर बल दिया।

1935 में एक नये नैगमिक, सर्वसत्तात्मक संविधान का निर्माण हुआ जिसने सहिष्णु बहुलतावाद के विस्तार को कम कर दिया। 1935 में पिलसुडस्कि का भी देहांत हो गया और उसके उत्तराधिकारी कर्नलों को ने एक नए फासीवादी राज्य दल — द कैम्प ऑफ नेशनल यूनिटी या ओ.जेड.एन. का निर्माण किया। इसका प्रथम निदेशक कर्नल को फलांगा के अध्यक्ष बोलेसलॉ पियासेकी पर काफी निर्भर था और इस संबंध के कारण कर्नल को के विरुद्ध कार्यवाई करके उन्हें निकाल बाहर किया गया और फलांगा से सारे संबंध तोड़ लिए गए। कुछ लोग इस व्यवस्था को 'निर्देशित जनतंत्र' कहते हैं परंतु 1939 तक यह शासन व्यवस्था लाभबंद राज्य संगठन और एक नियंत्रित एकदलीय व्यवस्था की ओर बढ़ रही थी।

3.7.2 हंगरी

हंगरी में विभिन्न प्रकार के फासीवाद, फासीवाद प्रकार के दक्षिणपंथी उग्र सुधारवादी और सर्वसत्तात्मक राष्ट्रवादी समूहों का बड़ा जमघट था। साम्यवादी बेला कुन विद्रोह (1919) के बाद मध्यम वर्ग के नौकरशाही के बड़े बेरोज़गार हिस्से ने फासीवाद के उदय में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। दोनों विश्वयुद्धों के बीच हंगरी पर अधिकांशतः एडमिरल होर्थी का संकीर्णवादी सर्वसत्तात्मक शासन कायम रहा। इसने उन्नीसवीं शताब्दी के सामाजिक पदानुक्रम को महत्त्व प्रदान किया और वह सीमित मताधिकार के आधार पर आधारित प्रतिबंधित संसद द्वारा शासन करता रहा। नेशनल यूनिटी पार्टी राजकीय पार्टी थी। एक फासीवाद समूह 'सेजेड फासीवाद' का नेतृत्व गियुला गम्बोस के हाथों में था जिसे जनता का समर्थन प्राप्त नहीं था परंतु 1932 में होर्थी ने उसे इस शर्त पर प्रधानमंत्री का पद देना स्वीकार किया कि वह अपने कार्यक्रम को नरम बनाएगा और यहूदी-विरोध छोड़ देगा। उसने सरकारी नेशनल यूनिटी पार्टी में बदलाव लाने और राज्य को राष्ट्रीय समाजवाद की ओर ले जाने की कोशिश की परंतु 1936 में उसकी मृत्यु हो जाने के कारण यह काम अधूरा रह गया।

फेरेंक जलाशी के संगठन 'ऐरो क्रॉस' को जनता का अच्छा समर्थन प्राप्त था। यह आंदोलन हंगरीआई नस्लवाद में विश्वास रखता था और इसने बृहद डैन्यूब - कारपेथियन क्षेत्र को हंगरी में शामिल किए जाने का प्रस्ताव रखा था परंतु गैर माग्यार लोगों के बहुसंख्यक क्षेत्र (लगभग 80-90 प्रतिशत) को स्वायत्ता देने का भी प्रस्ताव था। इसमें एक अंतर्विरोध यह था कि सिद्धांत स्तर पर जलासी हिंसा को नकराते थे। उसका आंदोलन यहूदी विरोधी नहीं था परंतु उनके प्रति उनमें सहानुभूति भी नहीं थी। इसलिए उन्होंने सभी यहूदियों को हंगरी छोड़कर चले जाने की वकालत की थी। इसके अलावा 'ऐरो क्रॉस' ने बृहत आर्थिक निगमन की वकालत की जिसमें सामूहिकता के हित में बड़े भूमिपतियों और पूंजी को समाप्त किया जाना था। 1930 के दशक के उतरार्द्ध में इसे मज़दूरों और किसानों का काफी समर्थन प्राप्त था परंतु युद्ध के दौरान इसकी लोकप्रियता में काफी कमी आई। इस आंदोलन पर नाजीवाद का प्रभाव बढ़ा और 1944 में जर्मनों की कठपुतली के रूप में थोड़े समय के लिए इन्होंने सत्ता संभाली।

3.7.3 चेकोस्लोवाक

यहां प्रत्यक्षतः दो फासीवाद संगठन थे : नेशनलिस्ट फासीस्ट कम्यूनिटी (एन.एफ.सी. 1926 में स्थापित) और चेक-नेशनल सोशलिस्ट कैम्प जिसका उदय 1930 के दशक में हुआ।

ये दोनों संगठन कमज़ोर बने रहे क्योंकि मज़दूर समाजवाद से चिपके रहे और मध्यवर्ग विभिन्न प्रकार के उदारवाद के प्रभाव में थे। युद्ध अन्तराल की अवधि में स्लोवाकिया में प्रमुख राजनैतिक ताकत स्लोवाक पीपुल्स पार्टी का अंशतः फासीकरण हुआ। मूलतः यह एक नरमपंथी संकीर्णवादी सर्वसत्तात्मक कैथोलिक लोकवादी राष्ट्रीय पार्टी थी जिसका झुकाव निगमवाद सामूहिकता की ओर था। 1938 के बाद यह नाजीकरण से प्रभावित हुई थी और यहूदी विरोधी नीतियां अपनाई गईं जिसमें यहूदियों को व्यापार और पेशे से अलग कर दिया गया था। बाद में नाज़ियों के दबाव में बड़ी संख्या में यहूदियों को पोलैंड भेज दिया गया।

3.7.4 बाल्टिक राज्य

1936 के अंत में घरेलू चुनाव में वामपंथियों द्वारा ज्यादा लाभ प्राप्त कर लेने के बाद सैनिक विद्रोह के द्वारा लिथुआनिया में एक दक्षिणपंथी नरम तानाशाही की स्थापना हुई। 1940 में इसके लुप्त होने तक अन्टानास स्मेटोना राज्य का प्रमुख बना रहा। कुछ हद तक बहुलतावाद को सहन किया गया था। हालांकि 1940 में राज्य एकदलीय शासन व्यवस्था की ओर बढ़ रहा था। राज्य दल नेशनल यूनियन (ताउतनीन काई) को बुद्धिजीवियों और अमीर किसानों का सामाजिक समर्थन प्राप्त हुआ था।

इसके विपरीत 1934 में नरमपंथी ताकतों द्वारा सर्वसत्तावाद को रोकने के लिए लैटविया और स्टोनिया में 'अधिनायकवादी प्रजातंत्र' की अधिक नरमपंथी शासन व्यवस्थाओं की स्थापना की गई थी। स्टोनिआई स्वतंत्रता सेनानियों के उग्र दक्षिणपंथी-सुधारवाद के प्रभाव को रोकने के लिए स्टोनिया में किसान दल के नेता कॉन्सटैनटिन पैटस ने एक अधिक अधिनायकवादी सरकार की स्थापना की। लैटविया में एक नए उलामानिस सरकार की स्थापना की गई जो वामपंथियों की विरोधी थी। इसके अलावा यह थन्डर क्रॉस की भी विरोधी थी जो नाजीवाद से प्रभावित लैटविया का एक फासीवाद जैसा ही दल था। हालांकि राजनैतिक स्तर पर यह जर्मनी का घोर विरोधी था। हालांकि लैटेविया और स्टोनिया दोनों में बहुलतावाद के प्रति सहिष्णुता की नीति अपनाई गई और इनमें से कहीं भी एक सुसंगठित संस्थागत तानाशाही का विकास नहीं हुआ।

बोध प्रश्न 3

1) निम्नलिखित में से कौन से कथम सही हैं? (सही कथन के सामने √ का और गलत कथन के सामने × गलत का निशान लगाइए)।

   क) वीशी सरकार ने स्वतंत्र नीतियों का अनुशरण किया। ( )

   ख) फ्रांसीसी दक्षिणपंथी जन समर्थन प्राप्त करने में असफल रहे थे। ( )

   ग) स्पेन का फासीवादी संगठन-फैलान्ज जनरल फ्रैंको की तानाशाही के पीछे की प्रमुख शक्ति था। ( )

   घ) 'ऐरो क्रॉस' हंगरी का एक प्रमुख फासीवादी आंदोलन था। ( )

2) फैलान्ज की विचारधारा पर पांच पक्तियां लिखिए।

....

....

....

....

....

3) हंगरी के राजनैतिक जीवन में 'ऐरो क्रॉस' की क्या भूमिका की? लगभग 100 शब्दों में अपना उत्तर लिखिए।

....

....

....

....

....

3.8 सारांश

इस इकाई में अपने निम्नलिखित पक्षों का अध्ययन किया :

- फासीवाद आंदोलन के आधारभूत लक्षण;
- फासीवाद के लिए सामाजिक और मनोवैज्ञानिक माहौल बनाने में युद्ध की भूमिका; और
- फासीवाद और इसकी संगठनात्मक शैलियों के विकास में आधारभूत विचारधाराओं का योगदान।

फासीवाद और संकीर्णवादी दक्षिणपंथी आंदोलन समाज और इसकी संस्थाओं को बदलना चाहते थे परंतु इन दोनों में काफी अन्तर था। इस इकाई में हमने फासीवाद के राजनैतिक पूर्व रूपों का भी विवेचन किया। यह कहना सही नहीं होगा कि विश्वव्यापी मंदी के कारण फासीवाद आंदोलन अचानक ही आ टपका। हालांकि मंदी ने फासीवाद के विकास के लिए आदर्श स्थितियां पैदा की थीं परंतु इसकी जड़ें उन्नीसवीं शताब्दी के यूराप और विश्व युद्ध में निहित थीं। आपने इटली, फ्रांस और स्पेन आदि में फासीवादी आंदोलन के विभिन्न रूपों का अध्ययन भी किया। इटली में फासीवादी शासन व्यवस्था के उदय का विस्तार से विवेचन किया गया और राज्य की प्रकृति पर अलग से विचार किया गया। फ्रांस, स्पेन, पूर्वी मध्य यूरोप (पोलैंड, हंगरी और चेकोस्लोवाकिया) और बाल्टिक राज्यों के उदाहरणों का अध्ययन करने से आपको युद्ध-अंतराल काल में फासीवादी राजनीति के विकास को समझने में मदद मिलेगी। हालांकि इस इकाई में हिटलर के नेतृत्व में यूरोप में जर्मनी के अति दक्षिणपंथी शासन व्यवस्था का ज़िक्र नहीं किया गया है। अगली इकाई में जर्मनी में फासीवाद के उदय की कहानी कही गई है।

3.9 शब्दावली

यहूदी-विरोधी : यहूदियों के खिलाफ पूर्वाग्रह, इसका आधुनिक रूप नस्लवाद और सामाजिक डार्विनवाद की विचारधाराओं पर आधारित है।

सामूहिकता / नैगमिक : एक अर्द्ध सामूहिकतावाद जिसमें एक संगठन में नियोक्ताओं और कर्मचारियों के बीच सौहार्द्रपूर्ण संबंध स्थापित करने का प्रयत्न किया जाता है।

संभ्रांत : सामाजिक तौर पर विशेषाधिकार प्राप्त समूह।

उदारवादी जनतंत्र : साझा राजनीति का एक राजनैतिक सिद्धांत जिसमें सामाजिक बहुलता और स्वतंत्रता का आदर और आधुनिक ऐच्छिक संस्थाओं का निर्माण किया जाता है।

लामबंदी : किसी खास विचार के आधार पर लोगों को कार्यवाई के लिए एकजुट करना।

राष्ट्रवाद : जनता या समुदाय का अपनी संस्कृति और इतिहास से लगाव और उस पर गर्व।

सामाजिक-डार्विनवाद : समाज के विकास में डार्विन के विचारों का उपयोग। इस धारणा के अनुसार समाज में लोग जीने के लिए आपस में प्रतिस्पर्द्धा करते हैं और केवल श्रेष्ठ या मज़बूत व्यक्ति, समूह और नस्ल ही विजयी होता है। इस धारणा का उपयोग जर्मनी और अन्य स्थानों पर जन्में फासीवाद द्वारा यहूदी विरोधी नीतियों के निर्धारण के लिए किया।

समाजवाद : सामुदायिक संसाधनों के सामूहिक स्वामित्व संबंधी राजनैतिक धारणा।

सिंडिकेलिस्म / श्रमिकसंघवाद : कारखाने में मज़दूरों के सिंडिकेट या संघों के ज़रिए उत्पादकों की आत्म मुक्ति में विश्वास।

3.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए भाग 3.2।

2) देखिए भाग 3.2।

3) आपके उत्तर में फासीवाद के दर्शन की नवीनता और जन संगठन के आधुनिक तरीकों और फासीवादियों द्वारा किए गए संस्थागत बदलाव तथा दक्षिणपंथी संकीर्णतावाद से इनका अंतर स्पष्ट कीजिए। देखिए भाग 3.2।

बोध प्रश्न 2

1) देखिए उपभाग 3.4.1।

2) देखिए उपभाग 3.4.2 और 3.4.4।

3) यहूदियों के प्रश्न पर उनके दृष्टिकोणों की तुलना कीजिए। देखिए उपभाग 3.4.4। अगली इकाई भी पढ़िए।

बोध प्रश्न 3

1) (क) (×) (ख) (√) (ग) (×) (घ) (√)

2) देखिए भाग 3.5।

3) देखिए भाग 3.7, खासकर हंगरी के दक्षिणपंथी आंदोलन वाला हिस्सा।